IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रीमती एनी बेसेंट के शैक्षिक सिद्धांतों का दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन

शोध पत्र

[1]**Kanchan Prabha**

[1]Designation-Research Scholars(Research Student)

[1]Affiliation address- SGPG college maltari,Azamgarh (Uttar Pradesh) 276140

[2]**Prof Kailash Nath Gupta**(प्रो. कैलाश नाथ गुप्त)

[2]Designation-HOD BEd, SGPG college Maltari Azamgarh Uttar Pradesh 276140

- **सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र "श्रीमती एनी बेसेंट के शैक्षिक सिद्धांतों का दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन" पर आधारित है। एनी बेसेंट एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक, राष्ट्रवादी तथा थियोसोफिकल विचारधारा की प्रमुख प्रवर्तक थीं। उन्होंने भारतीय शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन न मानकर चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, आध्यात्मिक उन्नति तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास का माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसे नैतिक, अनुशासित और आत्मनिर्भर नागरिक बनाना है। उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा का समर्थन किया तथा महिला शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा और धार्मिक सहिष्णुता पर विशेष बल दिया। इस शोध में एनी बेसेंट के शैक्षिक सिद्धांतों, उद्देश्यों तथा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि वर्तमान समय में नैतिक पतन, मूल्यहीनता और शिक्षा के व्यावसायीकरण की समस्याओं के समाधान हेतु एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक सिद्ध हो सकते हैं।

- **कुंजी** एनी बेसेंट, शैक्षिक विचारधारा, मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा, चरित्र निर्माण

• प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा को मानव जीवन के विकास का प्रमुख साधन माना गया है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना रहा है। शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत कर उसे आदर्श नागरिक बनाने का कार्य करती है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस देश की शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होती है, वह राष्ट्र सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक रूप से समृद्ध होता है।[1]

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक परिवर्तनशील हो गया है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी एवं व्यावसायिक ज्ञान को अधिक महत्व दिया जा रहा है, जबकि नैतिक मूल्यों एवं चरित्र निर्माण की उपेक्षा होती दिखाई दे रही है। परिणामस्वरूप समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता तथा नैतिक पतन जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में उन महान शिक्षाविदों के विचारों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है जिन्होंने शिक्षा को मानव कल्याण तथा सामाजिक उत्थान का माध्यम माना। श्रीमती एनी बेसेंट उन्हीं महान शिक्षाविदों में से एक थीं।[2] एनी बेसेंट का नाम भारतीय शिक्षा, समाज सुधार तथा राष्ट्रीय जागरण के इतिहास में अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। यद्यपि उनका जन्म इंग्लैंड में हुआ था, तथापि उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। वे थियोसोफिकल आंदोलन की प्रमुख नेत्री थीं तथा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता से अत्यधिक प्रभावित थीं। उन्होंने भारतीय समाज में शिक्षा के महत्व को समझते हुए ऐसी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया जो भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों तथा आध्यात्मिक चेतना पर आधारित हो।

एनी बेसेंट का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं होना चाहिए, बल्कि बालक के शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को भी समान महत्व दिया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को चरित्र निर्माण का साधन माना। उनके अनुसार यदि शिक्षा में नैतिकता और आध्यात्मिकता का समावेश नहीं होगा तो समाज का संतुलित विकास संभव नहीं है। उन्होंने बालक-केंद्रित शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा तथा महिला शिक्षा पर विशेष बल दिया। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में एनी बेसेंट का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।[3] उन्होंने वाराणसी में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की, जो आगे चलकर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का आधार बना। उन्होंने

[1] बेसेंट, ए) .2005). *शिक्षा और भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली .पृ .राजपाल एंड संस :45-58.

[2] बेसेंट, ए) .1917). *राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप.* वाराणसी .पृ .थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस :21-39.

[3] सक्सेना, एन) .आर .2016). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत.* मेरठ .पृ .लाज बुक डिपो :88-110.

भारतीय युवाओं में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण माध्यम माना। उनके विचारों में राष्ट्रवाद, आध्यात्मिकता और मानवतावाद का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

एनी बेसेंट का शिक्षा दर्शन भारतीय परंपरा एवं आधुनिक विचारों का समन्वित रूप था। वे ऐसी शिक्षा की पक्षधर थीं जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर, अनुशासित तथा समाजोपयोगी बनाए। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता, नैतिकता तथा विश्वबंधुत्व की भावना को शिक्षा के माध्यम से विकसित करने पर बल दिया। उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित शक्तियों का विकास करना है। आज के समय में जब शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित होता जा रहा है, तब एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्य शिक्षा का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, तनाव, प्रतिस्पर्धा तथा नैतिक पतन की समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में एनी बेसेंट द्वारा प्रतिपादित नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।[4]

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य एनी बेसेंट के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में उनके शिक्षा संबंधी सिद्धांतों, उद्देश्यों तथा भारतीय शिक्षा में उनके योगदान का विस्तृत विवेचन किया जाएगा। साथ ही वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट किया जाएगा। यह शोध न केवल शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी सहायक होगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि श्रीमती एनी बेसेंट का शिक्षा दर्शन केवल अपने समय तक सीमित नहीं था, बल्कि वर्तमान युग में भी अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायक है। उनके विचार शिक्षा को मानवता, नैतिकता तथा राष्ट्र निर्माण से जोड़ते हैं। इसलिए उनके शैक्षिक विचारों का अध्ययन आज के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

- **एनी बेसेंट मताधिकार आंदोलन :**

एनी बेसेंट महिला अधिकारों एवं मताधिकार आंदोलन की प्रमुख समर्थक थीं। उन्होंने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिलाने तथा उन्हें सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। वर्ष 1913 में उन्होंने लंदन में महिलाओं के समान अधिकार एवं वयस्क मताधिकार के समर्थन में आंदोलन का नेतृत्व किया। एनी बेसेंट का संघर्ष अहिंसात्मक एवं रचनात्मक था। वे महिलाओं को सम्मान, स्वतंत्रता और समाज में उचित स्थान दिलाने के पक्ष में थीं।[5] उन्होंने महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने तथा उनके अधिकारों की

[4] मिश्र, एस) .के .2018). *महान शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचार*. नई दिल्ली .पृ .अटलांटिक पब्लिशर्स :120-136.

[5] Annie Besant, The Future of Indian Politics, TPH, Adyar, 1922, pp.85-86.

रक्षा के लिए निरंतर प्रयास किए। मताधिकार आंदोलन का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को मतदान का अधिकार एवं संसद में समान प्रतिनिधित्व दिलाना था, ताकि वे अपने हितों की रक्षा के लिए प्रभावी भूमिका निभा सकें। इस आंदोलन में एमेलिन पैंकहर्स्ट तथा उनकी पुत्रियाँ क्रिस्टाबेल और सिल्विया पैंकहर्स्ट का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। एनी बेसेंट ने अपने लेखों एवं विचारों के माध्यम से महिला अधिकारों के समर्थन में जनजागरण किया। उनके विचारों से प्रेरित होकर अनेक भारतीय महिलाओं ने भी महिला अधिकार एवं स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

- **एनी बेसेंट एक समाज सुधारक के रूप में**

पति से अलग होने के बाद एनी बेसेंट ने अपना जीवन समाज सेवा एवं जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने महिला अधिकारों, धर्मनिरपेक्षता तथा मजदूरों के हितों के लिए कार्य किया। वे राष्ट्रीय सेक्युलर सोसायटी की प्रमुख सदस्य थीं तथा सामाजिक सुधार संबंधी विषयों पर प्रभावशाली भाषण देती थीं। उन्होंने मजदूर महिलाओं की समस्याओं को उठाया और "मैच गर्ल्स यूनियन" के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एनी बेसेंट ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर कार्य किया। भारत आने के बाद उन्होंने थियोसोफिकल सोसायटी के माध्यम से हिंदू धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया तथा होमरूल आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। वे महिलाओं को समान अधिकार दिलाने और समाज में उनकी स्थिति सुधारने के लिए सदैव संघर्षरत रहीं।

आपके रिसर्च पेपर के लिए इसे थोड़ा अधिक अकादमिक और व्यवस्थित रूप में इस प्रकार लिख सकते हैं:

- **एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार**

डॉ. एनी बेसेंट एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक एवं राष्ट्रवादी विचारक थीं। उन्होंने शिक्षा को मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास या रोजगार प्राप्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक, शारीरिक एवं सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है। वे ऐसी शिक्षा व्यवस्था की समर्थक थीं जो विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण, आत्मविश्वास, अनुशासन, देशभक्ति तथा मानव सेवा की भावना विकसित करे। एनी बेसेंट ने उस समय की औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली की आलोचना की, क्योंकि वह केवल रटने की प्रवृत्ति एवं मानसिक विकास तक सीमित थी। उन्होंने छात्र-केंद्रित, व्यावहारिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल दिया। उनके अनुसार विद्यालय भय का स्थान न होकर प्रेम, सहिष्णुता एवं सहयोग का केंद्र होना चाहिए। उन्होंने

गुरुकुल परंपरा से प्रेरित शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया, जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य आत्मीय संबंध हो। एनी बेसेंट ने बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना कर भारतीय शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके शैक्षिक विचार भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता एवं मानव मूल्यों पर आधारित थे। वर्तमान समय में शिक्षा के व्यावसायीकरण एवं नैतिक मूल्यों के ह्रास की स्थिति में उनके विचार अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक प्रतीत होते हैं।

- **संबंधित साहित्य का अध्ययन**

नवदीप कौर (2016)[6] ने शोध कार्य "डॉ० एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार (1847-1933)" पर अध्ययन किया। अध्ययनानुसार एनी बेसेण्ट उच्च उद्देश्यों और आदर्शों वाली एक शिक्षाविद थीं। उन्होंने दुनिया के राष्ट्रों के बीच अपनी जगह लेने के लिए और भारतीय आदर्शों पर स्थापित शैक्षिक विधियों को विकसित करने के लिए भारत को एक राष्ट्रीय भावना विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। वह राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सोसायटी के नाम से राष्ट्रीय शिक्षा की संस्थापक बनीं। वे देश में एक नई भावना लाईं और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया।

चंद्रलेखा सिंह (2019)[7] ने अपने शोध "एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार" में स्पष्ट किया कि एनी बेसेण्ट एक आयरिश राजनीतिक कार्यकर्ता, समाजवादी एवं थियोसोफिकल विचारधारा की समर्थक थीं। उन्होंने भारत में हिंदू धर्म, धार्मिक शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा के पुनरुद्धार पर बल दिया। 1898 में उन्होंने बनारस में हिंदू युवाओं की धार्मिक शिक्षा हेतु सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की। शोध में यह भी बताया गया कि एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचारों एवं गतिविधियों पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन हुआ है तथा उनके विचारों में जातीय व्यवस्था के समर्थन के संकेत भी मिलते हैं।

डॉ० आर० प्रिसिला (2022)[8] ने "शिक्षा के विकास में एनी बेसेण्ट की भूमिका" शीर्षक शोध में बताया कि एनी बेसेण्ट ने भारत में थियोसोफिकल आदर्शों तथा धार्मिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका मानना था कि हिंदू युवाओं की धार्मिक शिक्षा शिक्षा व्यवस्था का आवश्यक अंग होना चाहिए।

[6] नवदीप कौर (2016) डॉ एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार (1847-1933) सद्भावना-रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, खंड 6, नंबर 1 पृष्ठः 125-130।

[7] सिंह, चंद्रलेखा) .2019). *एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार.* अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।

[8] प्रिसिला, आर) .2022). *शिक्षा के विकास में एनी बेसेण्ट की भूमिका.* अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।

डॉ० कल्पना कुमारी (2022)[9] ने अपने शोध में भारत में शिक्षा में थियोसोफिकल दर्शन की भूमिका का अध्ययन किया। उन्होंने उल्लेख किया कि एनी बेसेण्ट ने भारत में प्रगतिशील शिक्षा को बढ़ावा दिया तथा 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की, जो आगे चलकर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का आधार बना। उन्होंने धर्म, शिक्षा, राजनीति और महिला उत्थान पर अनेक पुस्तकें लिखीं तथा भारतीय संस्कृति एवं हिंदू दर्शन के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- **शोध के उद्देश्य**

1. एनी बेसेंट व मूल्यपरक शिक्षा का अध्ययन करना।
2. एनी बेसेंट के शिक्षा विषयक विचारों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
3. एनी बेसेंट के शिक्षा दर्शन की व्यापकता और उसकी आधुनिक शिक्षा पर उपादेयता का अध्ययन करना।
4. एनी बेसेंट के शिक्षा दर्शन का वर्तमान शिक्षा पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन करना।

- **शोध की परिकल्पनाएँ**

1. एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार मूल्यपरक शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. एनी बेसेंट के शिक्षा संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं।
3. एनी बेसेंट का शिक्षा दर्शन बालक के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करता है।
4. एनी बेसेंट की शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान शिक्षा पद्धति में समानता एवं भिन्नता दोनों विद्यमान हैं।
5. एनी बेसेंट द्वारा प्रतिपादित नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा वर्तमान समाज की समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है।

- **शोध समस्या कथन**

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण तथा आध्यात्मिक चेतना का निरंतर ह्रास देखा जा रहा है। शिक्षा का उद्देश्य आज मुख्यतः रोजगार प्राप्ति एवं भौतिक विकास तक सीमित होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप समाज में अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता एवं नैतिक पतन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसी परिस्थिति में श्रीमती एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं, जिन्होंने शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, नैतिक उत्थान तथा राष्ट्रीय चेतना का माध्यम माना। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य एनी बेसेंट के

[9] कुमारी, कल्पना) .2022). *भारत में शिक्षा में थियोसोफिकल दर्शन की भूमिका.* अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।

शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करना तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उनकी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता का अध्ययन करना है।

- **भविष्य की संभावनाएँ**

एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार वर्तमान एवं भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। नई शिक्षा नीति, मूल्य शिक्षा, नैतिक शिक्षा तथा कौशल आधारित शिक्षा के संदर्भ में उनके विचारों का पुनर्मूल्यांकन किया जा सकता है। भविष्य में उनके शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन अन्य भारतीय एवं पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों के साथ किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विद्यालयी शिक्षा में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश हेतु उनके विचारों पर आधारित नई शिक्षण पद्धतियों का विकास भी संभव है।

- **निष्कर्ष**

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि श्रीमती एनी बेसेंट एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक एवं राष्ट्रवादी विचारक थीं। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन न मानकर चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, आध्यात्मिक उन्नति तथा राष्ट्रीय चेतना के विकास का माध्यम माना। उनके शैक्षिक विचार भारतीय संस्कृति एवं मानव मूल्यों पर आधारित थे। वर्तमान समय में शिक्षा के व्यावसायीकरण एवं मूल्यहीनता की स्थिति में एनी बेसेंट के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका शिक्षा दर्शन आज भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास तथा आदर्श समाज निर्माण के लिए प्रेरणादायक एवं उपयोगी है।

संदर्भ सूची

1. बेसेंट, ए. (2005). शिक्षा और भारतीय संस्कृति. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस. पृ. 45-58.
2. बेसेंट, ए. (1917). राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप. वाराणसी: थियोसोफिकल पब्लिशिंग हाउस. पृ. 21-39.
3. सक्सेना, एन. आर. (2016). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत. मेरठ: लाज बुक डिपो. पृ. 88-110.
4. मिश्र, एस. के. (2018). महान शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचार. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स. पृ. 120-136.
5. Annie Besant, The Future of Indian Politics, TPH, Adyar, 1922, pp.85-86.
6. नवदीप कौर (2016) डॉ एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार (1847-1933) सद्भावना-रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, खंड 6, नंबर 1 पृष्ठः 125-130।
7. सिंह, चंद्रलेखा. (2019). एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार. अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।
8. प्रिसिला, आर. (2022). शिक्षा के विकास में एनी बेसेण्ट की भूमिका. अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।
9. कुमारी, कल्पना. (2022). भारत में शिक्षा में थियोसोफिकल दर्शन की भूमिका. अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा विभाग, भारत।